श्री सहस्त्रकूट जिन चैत्यालय

सहस्त्रकूट जिनचैत्य परम सुन्दर सुखकारी। पावन पुण्य निधान दरस है जग अधकारी।।
रोग शोक दुःख हरै विपति दारिद्र नसावै। जो जन प्रीति लगाय नियम से नित गुण गावैं।।

अर्घ

जल सू आदिक द्रव्य सुधामई,
सुखदपद करमें धर ले सही ।
शुद्ध मन जिन सम्मुख हुजिये,
सहस्त्रकूट जिनालय पूजिये।

ॐ ह्रीं श्री सहस्त्रकूटजिनचैत्यालयेभ्यो अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ निर्वापामीति स्वाहा।

प्रेरणा स्थल :

श्री दिगम्बर जैन मंदिर सरावगियान (बगरूवालान), स्टेशन रोड़, जयपुर
देवोत्तर संस्थान की रक्षा एवं सर्वांगीण अभ्युदय में श्री चिरंजी लाल जी लुहाड़िया (नरायणा वालों)
का सर्वस्य योगदान (मन्दिर जी में स्थापित शिलालेख)